

(A-81) Seat No: _____

No. of Printed Pages: 02

Sardar Patel University

M. A. (Final) (External) Examination

Monday Date: 08/04/2019 Time: 02.00 P.M. to 05.00 P.M.

SAN-507: P-VII: Vedic Literature, Epic-Mahabharat Virataparva

Total Marks: 100

प्रश्न: १ गमे ते ऋषा ऋथाओनो सटीप्पश अनुवाद करो:

(१२)

१. वीळुपत्तमभिराशुहेमभिर्वा देवानां वा जूतिभिः शाशदाना।
तद् रासभो नासत्या सहस्रभाजा यमस्य प्रधने जिगाय।। (ऋग्वेद १/११६/२)
२. यो रध्रस्य चोदिताः यः कृशस्य यो ब्रह्मणो नाधमानस्य कीरेः।
युक्तग्राव्णो योऽविता सुशिप्रः सुतसोमस्य स जनास इन्द्रः।। (ऋग्वेद २/१२/६)
३. वसिष्ठं ह वरुणो नाव्याधादृषिं चकार स्वपा महोभिः।
स्तोतारं विप्रः सुदिनत्वे अह्नां यानु द्यावस्ततनन्यादुषासः।। (ऋग्वेद ८/८८/४)
४. आ त्वा गन् राष्ट्रं सह वर्चसोदिहि प्राङ् विशांपतिरेकराट् त्वं वि राज।
सर्वास्त्वा राजन् प्रदिशो ह्ययन्तूपसद्यो नमस्यो भवेदिह।। (अथर्ववेद ३/४/१)
५. वृषो मे रवो नभसा न तन्यतुरुग्रेण ते वधसा बाध आदु ते।
अहं तमस्य नृभिरग्रभं रसं तमस इव ज्योतिरुदेतु सूर्यः।। (अथर्ववेद ५/१३/३)
६. सप्त चक्रान्वहति काल एष सप्तास्य नाभीरमृतं न्वक्षः।
स इमा विश्वा भुवनान्यञ्जत्कालः स ईयते प्रथमो नु देवः।। (अथर्ववेद १९/५३/२)

प्रश्न: २ विश्वामित्र-नदीसंवादसूक्त (ऋग्वेद ३/३३) विशेष विस्तर नोंध लपो
अथवा

(१२)

प्रश्न: २ नीयेना विशेषे समीक्षात्मक नोंध लपो
१. सोमसूक्त (ऋग्वेद ८/८०)नुं रसदर्शन
२. ऋग्वेदना भाष्यकारो विशेषे नोंध लपो

(१२)

प्रश्न: ३ शिवसंकल्पसूक्त विशेषे विस्तर नोंध लपो
अथवा

(१०)

प्रश्न: ३ शतपथब्राह्मणाना विषयवस्तु अंगे विस्तृत नोंध लपो

(१०)

प्रश्न: ४ नीयेनामांथी गमे ते वे विशेषे समीक्षात्मक नोंध लपो

(१६)

१. मेधाजननसूक्त (अथर्ववेद १/१)नुं रसदर्शन
२. सत्यानृतसमीक्षकसूक्त विशेषे नोंध लपो
३. राष्ट्रसत्मासूक्त (अथर्ववेद ७/१२) विशेषे नोंध लपो
४. पृथ्वीसूक्त (अथर्ववेद १२/१) विशेषे नोंध लपो

प्रश्न: ५ गमे ते त्रश श्लोकोनो नोध सखित अनुवाद करो:

(१८)

१. अवश्यं त्वेव वासार्थं रमणीयं शिवं सुखम्।
संमन्त्र्य सहितैः सर्वैर्द्रष्टव्यमकुतोभयम् ॥१/१२॥
२. सेरन्ध्यो योऽरक्षिता लोके भुजिष्यां सन्ति भारत।
नैवमन्यां स्त्रियो यान्ति इति लोकस्य निश्चयः ॥३/१६॥
३. वृद्धो ह्यहं वै परिहारकामः सर्वान्मत्स्यांस्तरसा पालयस्व।
नैवविधाः क्लीबरूपा भवन्ति कथञ्चनेति प्रतिभाति मे मनः ॥१०/७॥
४. लोपामुद्रा तथा भीरु वयोरूपसमन्विता।
अगस्त्यमन्याद्धित्वा कामान्सर्वानमानुषान् ॥२०/११॥
५. अहं पारे समुद्रस्य हिरण्यपुरमारुजम्।
जित्वा षष्टि सहस्राणि रथिनामुग्रधन्विनाम् ॥५६/११॥
६. जित्वा त्रिगर्तान्संग्रामे गाश्चैवादाय केवलाः।
अशोभत महाराजः सह पार्थैः श्रिया वृतः ॥६३/२॥

प्रश्न: ५ संस्कृत वाङ्मयमां महाभारतनुं उपलब्धग्रंथ तरीके स्थान यथो

(१९)

अथवा

प्रश्न: ५ महाभारत कालीन समाज विशेषे विस्तृत नोध लभो

(१९)

प्रश्न: ६ धौम्यमुनिना पांडवोने उपदेश विशेषे विस्तृत नोध लभो

(१९)

अथवा

प्रश्न: ६ विराटपर्वमां प्रतिबिंबित अर्जुननां पात्र विशेषे नोध लभो

(१९)

—*—